सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

शशी यादव*
सुमित गंगवार**

यह शोध पत्र सेवा-पूर्व अध्यापकों (बी.एड. प्रशिक्षुओं) की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के शोध अध्ययन पर आधारित है। इसके अतिरिक्त आवासीय पृष्ठभूमि तथा अकादमिक सत्र के आधार पर सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया था, जो वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि पर आधारित था। इस अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) में नामांकित 62 सेवा-पूर्व अध्यापकों (बी.एड. प्रशिक्षुओं) का चयन प्रासंगिक प्रतिदर्शन प्रविधि द्वारा किया गया था। शोध संबंधित आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए शोधार्थी द्वारा पाँच बिंदु लिकर्ट मापनी पर आधारित स्व-निर्मित बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया था। इस मापनी में बहुसांस्कृतिक शिक्षा की प्रकृति, उसकी आवश्यकता तथा औचित्य को ध्यान में रखते हुए कुल 26 कथनों (19 धनात्मक तथा 7 ऋणात्मक) को सम्मिलित किया गया था। इस मापनी द्वारा एकत्रित आँकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधार्थी द्वारा सांख्यिकीय प्रविधियों के अंतर्गत प्रतिशत, विचरणशीलता गुणांक, स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण तथा मान-व्हिटनी U परीक्षण प्रविधियों का उपयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषणोपरांत शोध निष्कर्ष के रूप में ज्ञात हुआ कि सेवा-पूर्व अध्यापकों (बी.एड. प्रशिक्षुओं) की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। साथ ही, आवासीय पृष्ठभूमि तथा अकादमिक सत्र के आधार पर सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। इस शोध परिणाम के आलोक में सेवा-पूर्व अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अपनी सकारात्मक अभिवृत्ति की सहायता से भावी सेवाकालीन शिक्षा में शिक्षण-अधिगम पारिस्थितिकी के विभिन्न घटकों यथा पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण-अधिगम विधियों, आकलन प्रविधियों इत्यादि को बहुसांस्कृतिक शिक्षा के दृष्टिकोण से परिवर्तन एवं परिमार्जन करके विद्यार्थी-केंद्रित बनाने में सक्षम हो सकेंगे।

भारत सरकार ने इक्कीसवीं सदी के भारत की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु भारतीय शिक्षा में बदलाव करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू किया है। इस नीति में शिक्षा के सभी स्तरों

* *विद्यार्थी, एम.एड.*, शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 244001
** *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226007

की गुणवत्ता संवर्धन हेतु अनेक अनुशंसाएँ की गई हैं। भारत जैसे बहुसांस्कृतिक तथा बहुभाषिक देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच को सुनिश्चित करने के लिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कई अनुशंसाएँ की गई हैं, जिससे भारत की सांस्कृतिक तथा भाषिक वैविध्यता को सम्मान प्रदान करते हुए वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास का सुनिश्चयन किया जा सके। इस नीति के मूलभूत सिद्धांतों में इस बात की महत्ता को स्पष्ट किया गया है कि बहुभाषिकता और अध्ययन-अध्यापन के कार्य में भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन दिए जाने के साथ-साथ सभी पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्र और नीति में स्थानीय संदर्भ की विविधता एवं स्थानीय परिवेश का सार्थक समावेशन करना चाहिए। समाज तथा संस्कृति को भारतीय जड़ों और गौरव से बाँधे रखने के लिए शिक्षा में भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति तथा ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं से प्रेरित होते हुए उन्हें सम्मिलित करना चाहिए। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के बिंदु 2.8 में भी इस बात को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है कि शिक्षा में बहुसांस्कृतिक तथा बहुभाषिकता को महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त बिंदु 4.11 से बिंदु 4.23 में भी इस संप्रत्यय पर बल दिया गया है कि शिक्षा की गुणवत्ता के उन्नयन में बहुभाषिकता तथा बहुसांस्कृतिकता सकारात्मक सहयोग देती है। ऐसे में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रत्येक पक्ष में बहुभाषिकता तथा बहुसांस्कृतिकता को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए विद्यार्थियों को सीखने के अवसर देने चाहिए।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा, शिक्षा का प्रकार्यात्मक प्रारूप है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ विविधता में एकता एक संवैधानिक एवं सामाजिक मूल्य है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करने के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षण-अधिगम की उत्पत्ति हुई, जो प्राचीनकाल से ही भारतीय दर्शन पर आधारित है, जिसमें सामाजिक न्याय, समता एवं समानता, विविधता तथा बहुभाषाई एवं बहुसांस्कृतिक समावेशी अधिगम-शिक्षण निहित है।

विभिन्न शैक्षिक विद्वान सांस्कृतिक विविधता को विद्यालयों एवं शैक्षिक संस्थानों की शैक्षिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं। बहुसांस्कृतिक शिक्षा, शिक्षण का एक तरीका है, जो विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को स्कूल में यथासंभव सफल होने में मदद करता है। यह सुनिश्चित करने की कोशिश करता है कि सभी को सीखने का समान अवसर मिले, चाहे उनकी जाति, क्षेत्रीयता, जेंडर या संस्कृति कुछ भी हो। इसलिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा विद्यार्थियों को सांस्कृतिक वातावरण से जोड़ने एवं सीखने का सार्थक उपागम है।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा के लक्ष्य

बहुसांस्कृतिक शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य बच्चों को उनके व्यक्तिगत जेंडर, जाति, वर्ग और संस्कृति के आधार पर सकारात्मक पहचान बनाने में मदद करना है। इससे उन्हें मज़बूत सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध विकसित करने में मदद मिल सकती है तथा यह भी सिखाती है कि विविध सांस्कृतिक वातावरण में कैसे रहना है?

भारत में विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को मुख्यधारा की कक्षा में शामिल करने पर लगभग सभी शिक्षा नीतियों एवं आयोगों में अनुशंसा की गई है, जिसके माध्यम से अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों द्वारा सेवा-पूर्व अध्यापकों एवं सेवाकालीन अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। अध्यापक शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009* में भी अध्यापकों को विभिन्न संस्कृतियों से आने वाले लोगों के साथ काम करने के कौशल सिखाने और सांस्कृतिक शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यचर्या में एकीकृत करने पर बल दिया गया है।

लोगों का धार्मिक विश्वास, जीवनशैली व सामाजिक संबंधों की समझ एक-दूसरे से बहुत अलग है। सभी समुदायों को सहअस्तित्व तथा समान रूप से समृद्ध होने का अधिकार है और शिक्षा व्यवस्था को भी हमारे समाज में निहित इस सांस्कृतिक विविधता के अनुरूप होना चाहिए। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में उल्लेखित है कि अध्यापकों को पाठ्यचर्या को तीन मुख्य सिद्धांतों (प्रासंगिकता, सुसंगतता और एकीकरण) के आधार पर निर्मित करना चाहिए। विभिन्न संस्कृतियों से आने वाले विद्यार्थियों को पढ़ाते समय ये सिद्धांत महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि ये सिद्धांत अध्यापकों को यह सुनिश्चित करने में मदद करते हैं कि विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले पाठ विद्यार्थियों के जीवन के लिए प्रासंगिक हैं और पाठ एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में स्पष्ट रूप से उल्लेखित किया गया है कि—

- बच्चे सबसे अच्छा तब सीखते हैं, जब वे विद्यालय में सीखी गई बातों का उपयोग अपने वास्तविक जीवन में करते हैं।
- हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हमारी पाठ्यचर्या बच्चे को सभी क्षेत्रों में विकसित होने के अवसर प्रदान करे।
- बच्चों में ऐसी पहचान विकसित करने पर बल दिया जाए जो राष्ट्रीय सरोकारों को ध्यान में रखती है और प्रकृति में लोकतांत्रिक हो।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और यूनेस्को 2019 अनुशंसा करते हैं कि अध्यापकों को अपनी कक्षाओं में बहुसांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए, क्योंकि यह एक बहुसांस्कृतिक समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा का विचार हाल के वर्षों में अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि विद्यालयों और अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में यह माना जाने लगा है कि यह विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने में मदद करने का एक मूल्यवान तरीका है। *कमीशन ऑन मल्टी कल्चर एजुकेशन ऑफ़ द अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ कालेजिस फ़ॉर टीचर एजुकेशन* ने बहुसांस्कृतिक शिक्षा के संदर्भ में निम्नलिखित तीन मुख्य बिंदु बताएँ हैं (बैपटिस्ट और बैपटिस्ट, 1980)—

- सांस्कृतिक विविधता एक मूल्यवान संपत्ति है, जिसका उपयोग कक्षाओं को समृद्ध बनाने के लिए किया जा सकता है।
- बहुसांस्कृतिक शिक्षा विभिन्न संस्कृतियों की समझ विकसित करके उनकी स्वीकृति प्रदान करने में सहायक होती है, जो प्रतिफल आधारित अधिगम के लिए आवश्यक है।

- अध्यापकों को सांस्कृतिक विविधता के सभी पहलुओं से अवगत होने की आवश्यकता है ताकि सभी विद्यार्थियों के लिए एक स्वागत योग्य और सहायक वातावरण बनाया जा सके।

सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रयास

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प) सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन में विभिन्न ठोस कदम उठा रही है। परिषद् अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के संबंध में केंद्र तथा राज्य सरकारों, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं विश्वविद्यालयों को सलाह देने के साथ-साथ अध्यापक शिक्षा से जुड़ी सभी प्रकार की पाठ्यचर्या निर्धारित करके समय-समय पर नूतन पाठ्यक्रम आरंभ करती है। संस्थानों के मानक एवं मानदण्ड विकसित करने तथा उनके अनुसार अध्यापक शिक्षा संस्थानों के संचालन की निगरानी कर अध्यापक शिक्षा की गुणवता सुनिश्चित करती है। इसके अतिरिक्त परिषद् केंद्र सरकार द्वारा अध्यापक शिक्षा के संबंध में लिए गए निर्णयों को क्रियान्वित भी करती है। साथ ही, अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अंतराष्ट्रीय स्तर पर संबंध स्थापित करके नवाचारों को बढ़ावा देकर सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन में अपना योगदान दे रही है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन में विभिन्न ठोस कदम उठा रही है। यह प्रारंभिक तथा माध्यमिक स्तर की अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य निश्चित करने के साथ-साथ पाँच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की सहायता से सेवा-पूर्व एवं सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम संचालित करती है। यह परिषद् पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल के माध्यम से माध्यमिक व्यावसायिक शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या एवं अधिगम-सामग्री तथा माध्यमिक व्यावसायिक अध्यापक प्रशिक्षण प्रदान करती है। वर्तमान समय में यह परिषद् डिजिटल शिक्षा के विभिन्न माध्यमों, जैसे— ई-पाठशाला, दीक्षा, निष्ठा तथा स्वयंप्रभा के माध्यम से सेवा-पूर्व एवं सेवकालीन अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में अपना योगदान दे रही है। इसके अतिरिक्त परिषद् अध्यापक शिक्षा के लिए विभिन्न प्रकार की पाठ्यपुस्तकों, हैंडबुक, संसाधन सामग्री, शोध पत्रिकाओं आदि द्वारा अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता को अभिवृद्धित कर रही है।

शोध का औचित्य

भारत एक बहुसांस्कृतिक तथा बहुभाषिक देश है। शिक्षा तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बहुसांस्कृतिकता तथा बहुभाषिकता का विशिष्ट महत्व होता है। वर्तमान समय में विश्व के वे देश जिनके समाजों में बहुसांस्कृतिकता तथा बहुभाषिकता की विशेषता देखने को मिलती है, वे अपनी पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण-अधिगम विधियों, आकलन प्रविधियों इत्यादि में इसके अनुरूप परिवर्तन एवं परिमार्जन कर रहे हैं। ऐसे में यह जानना अति आवश्यक हो जाता है कि भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में शिक्षा के भावी अध्यापकों का बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण कैसा है? शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन में संबंधित साहित्य की समीक्षा के दौरान यह पाया कि भारत में अभी बहुसांस्कृतिक

शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक शोध अध्ययन करने की आवश्यकता है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में अधिकांश शोध अध्ययन विषयवस्तु के विश्लेषण पर आधारित थे। अत: शोधार्थी को बहुसांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में इस अनुभवपरक शोध अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई, जिसमें उन्होंने सेवा-पूर्व अध्यापकों की आवासीय पृष्ठभूमि तथा अकादमिक सत्र को ध्यान में रखकर बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति उनकी अभिवृत्ति का अध्ययन करने का प्रयास किया।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

1. **सेवा-पूर्व अध्यापक**— इस शोध अध्ययन में सेवा-पूर्व अध्यापकों का तात्पर्य शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद, में अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के बी. एड. के कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों अर्थात सेवा-पूर्व अध्यापकों से है।
2. **बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति**— बहुसांस्कृतिक शिक्षा विभिन्न समूहों के इतिहास, संस्कृतियों और योगदान के बारे में विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए विकसित शैक्षिक विधियों का एक समूह है। हमारी वे विशेष वृत्तियाँ, जो किसी व्यक्ति, पदार्थ, समस्या, परिस्थिति या विचार के प्रति हमारे आचरण का स्वरूप निर्धारित करती हैं, अभिवृत्ति कहलाती हैं। इस शोध अध्ययन में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तात्पर्य शिक्षा संकाय मुरादाबाद में अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के बी.एड. के कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों अर्थात सेवा-पूर्व अध्यापकों के 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' पर प्राप्त प्राप्तांकों से है।

शोध उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे—

- सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों को बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करना।
- अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करना।

शोध परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की शोध परिकल्पनाएँ इस प्रकार थीं—

- सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है।
- ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है।
- अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है, जिसके अंतर्गत सर्वेक्षण शोध विधि (क्रॉस-सेक्शनल सर्वे

डिज़ाइन) का उपयोग किया गया था। इस अभिकल्प में शोधार्थी एक समय पर एक ही बार में शोध से संबंधित समस्त आँकड़ों का एकत्रीकरण करता है। इस अभिकल्प की सहायता से शोध अध्ययन में चयनित प्रतिदर्श की वर्तमान अभिवृत्तियों या अभ्यासों को ज्ञात किया जा सकता है (क्रेसवेल, 2012)।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर

इस शोध अध्ययन में सेवा-पूर्व अध्यापकों (बी.एड. प्रशिक्षुओं) की आवासीय पृष्ठभूमि तथा अकादमिक सत्र को गुण (*एट्रिब्यूट*) चर और बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को निकष (*क्राइटेरियन*) चर के रूप में प्रयुक्त किया गया था।

प्रतिदर्श तथा प्रतिदर्शन प्रविधि

इस शोध अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के अंतर्गत संचालित बी. एड. कार्यक्रम के अकादमिक सत्र 2021–23 तथा 2022–24 में अध्ययनरत सभी सेवा-पूर्व अध्यापकों को सम्मिलित किया गया था। शोध से संबंधित आँकड़ों के एकत्रीकरण के दिन (दिनाँक 02.02.2023) सत्र 2021–23 तथा 2022–24 में क्रमशः 25 तथा 43 सेवा-पूर्व अध्यापक उपस्थित थे। इनमें से सत्र 2021–23 के 21 तथा सत्र 2022–24 के 41 सेवा-पूर्व अध्यापकों ने ही अभिवृत्ति मापनी भरकर शोधार्थी को दी थी। इस प्रकार अंतिम रूप से चयनित प्रतिदर्श में सेवा-पूर्व अध्यापकों की कुल संख्या 62 थी, जिसका चयन असंभाविता प्रतिदर्शन विधि (Non-Probability Sampling Method) के अंतर्गत प्रासंगिक प्रतिदर्शन प्रविधि (Accidental or Incidental Sampling Technique) की सहायता से किया गया था। शोध में प्रयुक्त चरों के आधार पर अंतिम रूप से चयनित प्रतिदर्श का पुनर्वितरण तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी ने सेवा-पूर्व अध्यापकों से शोध संबंधित मात्रात्मक आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए पाँच बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित 26 कथनों (19 धनात्मक तथा 7 ऋणात्मक) से युक्त स्व-निर्मित 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' का उपयोग किया था। 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' की प्रत्यक्ष/आमुख वैधता (Face Validity) तथा अंतर्विषयक वैधता (Content Validity) का निर्धारण विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों में कार्यरत सात शिक्षक-प्रशिक्षकों (विषय विशेषज्ञों) की सहायता से किया गया। इसके अतिरिक्त विश्वसनीयता (आतंरिक संगतता विधि) का निर्धारण विभक्तार्द्ध विश्वसनीयता विधि (Split-half Reliability Method) के अंतर्गत स्पीयरमैन-ब्राउन प्रोफेसी सूत्र (Spearman-Brown Prophecy

तालिका 1— शोध में प्रयुक्त चरों के आधार पर प्रतिदर्श का विवरण

क्र. सं.	गुण चर	समूह	संख्या (N)	कुल संख्या
1.	आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	32	62
		शहरी	30	
2.	अकादमिक सत्र	2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर)	41	62
		2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर)	21	

Formula) की सहायता से किया गया, जिसका मान + 0.53 प्राप्त हुआ।

प्रदत्त संकलन प्रक्रिया

इस शोध अध्ययन से संबंधित प्रदत्तों के एकत्रीकरण के लिए शोधार्थी ने सर्वप्रथम शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के प्राचार्य से अपने शोध अध्ययन से अवगत कराया। अवगत कराने के पश्चात, प्रदत्तों के एकत्रीकरण के लिए अनुमति प्राप्त की। उसके बाद शोधार्थी ने शोध अध्ययन में चयनित सेवा-पूर्व अध्यापकों से तादातम्य स्थापित करते हुए शोध के विषय में बताया। साथ ही, उनसे 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' के कथनों पर प्रतिक्रिया देने के लिए अनुरोध किया। इसके अतिरिक्त उनको यह भी बताया कि आपसे प्राप्त जानकारी को गोपनीय रखते हुए इसका उपयोग मात्र शोध अध्ययन के लिए किया जाएगा।

फलांकन प्रक्रिया

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा सेवा-पूर्व अध्यापकों पर 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' के प्रशासन करने के पश्चात प्राप्त शोध संबंधी मात्रात्मक आँकड़ों का फलांकन, फलांकन कुंजी की सहायता से किया गया। 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' के धनात्मक कथनों पर सेवा-पूर्व अध्यापकों की पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत पर दी गई प्रतिक्रियाओं को क्रमशः 5, 4, 3, 2 तथा 1 अंक एवं ऋणात्मक कथनों पर दी गई प्रतिक्रियाओं को क्रमशः 1, 2, 3, 4 तथा 5 अंक प्रदान किए गए। इस प्रकार सेवा-पूर्व अध्यापकों द्वारा मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों का प्रसार 26–130 अंकों के मध्य था।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियाँ

इस शोध अध्ययन में समस्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधार्थी द्वारा सांख्यिकी प्रविधियों के अंतर्गत प्रतिशत, विचरणशीलता गुणांक, मान व्हिटनी U परीक्षण तथा स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का उपयोग किया गया था।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

- शोध अध्ययन के पहले उद्देश्य 'सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन' के लिए सभी सेवा-पूर्व अध्यापकों से प्राप्त आँकड़ों को सांख्यिकी प्रविधियों के अंतर्गत माध्य, मानक विचलन, प्रतिशत तथा विचरणशीलता गुणांक की सहायता से विश्लेषित किया गया, जिसका परिणाम तालिका 2 तथा 3 (पृष्ठ संख्या 67) में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 2— बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति समस्त सेवा-पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति

क्र. सं.	प्राप्तांकों की स्थिति	सेवा-पूर्व अध्यापकों की संख्या (N)	प्रतिशत %	अभिवृत्ति का स्तर
1.	110–130	24	38.70	अत्यधिक उच्च स्तर
2.	89–109	38	61.30	उच्च स्तर
3.	68–88	00	00.00	औसत स्तर
4.	47–67	00	00.00	निम्न स्तर
5.	26–46	00	00.00	अत्यधिक निम्न स्तर
कुल		62	100 %	–

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति कुल 62 सेवा-पूर्व अध्यापकों में से 38 सेवा-पूर्व अध्यापकों को 89 से 109 प्राप्तांकों के मध्य प्राप्तांक प्राप्त हुए हैं। वहीं 24 सेवा-पूर्व अध्यापकों को 110 से 130 प्राप्तांकों के मध्य प्राप्तांक प्राप्त हुए, जबकि किसी भी सेवा-पूर्व अध्यापक को 88 तथा इससे कम प्राप्तांक प्राप्त नहीं हुए हैं। चूँकि चयनित न्यादर्श का 61.30 प्रतिशत भाग बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के उच्च स्तर से संबंधित है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति सेवा-पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। अतः इस परिप्रेक्ष्य में दिशाई परिकल्पना सेवा-पूर्व अध्यापकों में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है, निरस्त नहीं की जाती है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति सेवा-पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का माध्य तथा मानक विचलन क्रमशः 4.123 तथा 0.428 है, जो यह दर्शाता है कि सेवा-पूर्व अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा के पक्ष में अपनी उच्च स्तर की सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। इसी प्रकार माध्य पर आधारित विचरणशीलता गुणांक 10.38 प्रतिशत है। यह मान बहुत कम है जोकि इस तथ्य का द्योतक है कि सेवा-पूर्व अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। इसी प्रकार (4.123/5)*100 = 82.46 प्रतिशत अर्थात सेवा-पूर्व अध्यापकों के द्वारा दी गईं प्रतिक्रियाएँ 10.38 प्रतिशत विचलन के साथ 82.46 प्रतिशत बहुसांस्कृतिक शिक्षा के पक्ष में हैं। इसलिए समेकित रूप से यह कहा जा सकता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है।

इस शोध अध्ययन का प्रथम उद्देश्य 'सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन' करना था। इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण के उपरांत शोधार्थी ने परिणाम में पाया कि सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। इस परिणाम की पुष्टि यिल्दिरिम और तेज़िस (2016) और टॉरे (2020) के शोध परिणामों से भी होती है। इन शोधार्थियों ने विभिन्न स्तरों पर कार्यरत अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को जानने के लिए शोध अध्ययन किए और पाया कि विभिन्न स्तरों पर कार्यरत अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है।

इस शोध अध्ययन के इस परिणाम का प्रमुख कारण यह हो सकता है कि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में बहुसांस्कृतिक शिक्षा पर बल दिया गया है तथा कक्षा के स्वरूप को बहुसांस्कृतिक बनाने की बात कही गई है।

तालिका 3— सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का माध्य, मानक विचलन तथा विचरणशीलता गुणांक

समूह	संख्या (N)	माध्य	मानक विचलन	विचरणशीलता गुणांक
सेवा-पूर्व अध्यापक	62	4.123	0.428	10.38%

शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में बी.एड. कार्यक्रम के लिए विकसित पाठ्यचर्या में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के संप्रत्यय तथा *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* को सम्मिलित किया गया है। सेवा-पूर्व अध्यापकों को कक्षागत शिक्षण-अधिगम में ऐसा वातावरण प्राप्त होता है जहाँ प्रत्येक संस्कृति के विद्यार्थियों की संस्कृति को आदर-सम्मान दिया जाता है। साथ ही, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पाठ्यचर्या को इस प्रकार नियोजित एवं क्रियान्वित किया जाता है कि सभी सेवा-पूर्व अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा, इसकी आवश्यकता एवं महत्व से परिचित हो जाएँ। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में ये सभी अभ्यास सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च होने के कारण हो सकते हैं।

- शोध अध्ययन के दूसरे उद्देश्य ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए सभी सेवा-पूर्व अध्यापकों से प्राप्त आँकड़ों को आवासीय पृष्ठभूमि (ग्रामीण तथा शहरी) के आधार पर व्यवस्थित करके सर्वप्रथम स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अभिधारणाओं की जाँच की गई। इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी सभी अभिधारणाओं के संतुष्ट हो जाने के बाद स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का विवरण तालिका 4 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति सेवा-पूर्व अध्यापकों की आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करने पर यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण सेवा-पूर्व अध्यापकों के अभिवृत्ति फलांकों का माध्य 105.31 तथा मानक विचलन 6.15 है। इसी प्रकार शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों के अभिवृत्ति फलांकों का माध्य 109.20 तथा मानक विचलन 10.01 है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों के अभिवृत्ति फलांकों का परिकलित स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का मान 1.855 है, जिसका स्वतंत्र्यांश 60 पर सार्थकता मान 0.069 है। यह मान 0.01 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है, इसलिए सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं की जाती है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा

तालिका 4— सेवा-पूर्व अध्यापकों की आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का मान

आवासीय पृष्ठभूमि	संख्या (N)	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	t-मान	p-मान	सार्थकता स्तर	टिप्पणी
ग्रामीण	32	105.31	6.15	60	1.855	0.069	0.01	p-मान सार्थक नहीं है।
शहरी	30	109.20	10.01					

के प्रति ग्रामीण सेवा-पूर्व अध्यापकों तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह स्पष्ट होता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनकी आवासीय पृष्ठभूमि का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। तालिका 4 में प्रदर्शित ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति फलांकों के माध्य क्रमशः 105.31 तथा 109.20 है, जो लगभग समान हैं, जिसके परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान है।

इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण के उपरांत शोधार्थी ने परिणाम में पाया कि ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर एकसमान है। इस शोध परिणाम की पुष्टि डबबेल्ड और अन्य (2019) के शोध परिणाम से होती है। इन शोधार्थियों का शोध परिणाम भी इस तथ्य की पुष्टि करता है कि विद्यालयी स्तर पर कार्यरत ग्रामीण तथा शहरी अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा प्रत्यक्षण में सार्थक अंतर नहीं है। इस शोध परिणाम के प्रमुख कारण ये हो सकते हैं कि शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों के लिए शैक्षिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश एकसमान है। साथ ही, इन सेवा-पूर्व अध्यापकों की कक्षा में अध्ययन-अध्यापन के दौरान अध्यापकों द्वारा भी आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर पक्षपात नहीं किया जाता है। शिक्षण सामग्री को आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर तटस्थ मानकर सभी सेवा-पूर्व अध्यापकों को अधिगम के समान तथा पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाते हैं।

- शोध अध्ययन के तीसरे उद्देश्य अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए सेवा-पूर्व अध्यापकों से प्राप्त आँकड़ों को अकादमिक सत्र के आधार पर व्यवस्थित किया गया। उसके उपरांत स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अभिधारणाओं की जाँच की गई। अभिधारणाओं की जाँच करते समय देखा गया कि इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी एक अभिधारणा 'दोनों समूहों के प्रसरणों में समजातीयता' की अभिधारणा असंतुष्ट हो गई। अतः अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की जगह माध्य रैंकों की तुलना करने के लिए शोधार्थी द्वारा अप्राचलिक सांख्यिकी अर्थात मान-व्हिटनी U परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया। मान-व्हिटनी U परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का विवरण तालिका 5 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 5 (पृष्ठ संख्या 70) के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति सेवा-पूर्व अध्यापकों के अकादमिक सत्र के आधार पर अभिवृत्ति फलांकों के माध्य रैंकों की तुलना करने पर यह ज्ञात होता कि मान-व्हिटनी U परीक्षण का मान 352.50 है, जिसका सार्थकता मान 0.245 है। यह मान 0.01 सार्थकता स्तर के

तालिका 5— सेवा-पूर्व अध्यापकों के अकादमिक सत्र के आधार पर अभिवृत्ति फलांकों का मान-व्हिटनी U परीक्षण का मान

अकादमिक सत्र	संख्या (N)	माध्य रैंक	रैंकों का योग	मान-व्हिटनी U मान	p-मान	टिप्पणी
2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर)	41	29.60	1213.50	352.50	0.245	p-मान सार्थक नहीं है।
2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर)	21	35.21	739.50			
कुल	62					

मान से अधिक है, अतः सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों के माध्य रैंकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं की जाती है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति के माध्य रैंकों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह स्पष्ट होता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अकादमिक सत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 5 में प्रदर्शित 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति फलांकों के माध्य रैंक क्रमशः 29.60 तथा 35.21 हैं, जो लगभग समान हैं। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान है।

इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात शोधार्थी ने परिणाम में पाया कि अकादमिक सत्र के आधार पर सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एकसमान थी। इस परिणाम के प्रमुख कारण ये हो सकते हैं कि शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में बी.एड. में प्रवेश के पश्चात सेवा-पूर्व अध्यापकों का उन्मुखीकरण किया जाता है, इस उन्मुखीकरण में पूरी पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर विस्तृत चर्चा की जाती है। साथ ही, उनके इसलिए विकसित पाठ्यचर्या में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के संप्रत्यय तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सम्मिलित किया गया है। दोनों अकादमिक सत्रों में पढ़ाई जाने वाली शिक्षण सामग्री इस प्रकार नियोजित तथा क्रियान्वित की जाती है कि सभी सेवा-पूर्व अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा तथा अध्यापन वृत्ति में इसकी महत्ता से परिचित हो सकें। दोनों अकादमिक सत्रों के सेवा-पूर्व अध्यापकों को जो शिक्षक-प्रशिक्षक पढ़ाने आते थे, वे अपनी कक्षा की अधिगम पारिस्थितिकी में प्रत्येक सेवा-पूर्व अध्यापक की संस्कृति को महत्वपूर्ण स्थान देते थे।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के परिणाम यह सिद्ध करते हैं की सेवा-पूर्व अध्यापकों में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के

प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। साथ ही, आवासीय पृष्ठभूमि तथा अकादमिक सत्र के आधार पर सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। इस शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, जिनमें निर्माता पाठ्यचर्या नीति-निर्धारक, पुस्तक-लेखक, अध्यापक तथा शिक्षा से जुड़े अन्य हितधारक हो सकते हैं, जो अग्रलिखित हैं—

पाठ्यचर्या निर्माताओं के लिए

इस शोध अध्ययन में सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च पाया गया है। यह शोध अध्ययन पाठ्यचर्या निर्माताओं के लिए यह अनुशंसित करता है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर अध्यापन कार्य के लिए शिक्षित हो रहे सेवा-पूर्व अध्यापकों की पाठ्यचर्या में बहुसांस्कृतिक शिक्षा को सम्मिलित करके इसके अभ्यास को सुनिश्चित किया जा सके।

पाठ्यपुस्तक लेखकों के लिए

इस शोध अध्ययन के परिणाम पाठ्यपुस्तक लेखकों के लिए भी सहायक सिद्ध होंगे। भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में बहुसांस्कृतिक शिक्षा की बहुत आवश्यकता है, इसलिए पाठ्यपुस्तकों द्वारा विद्यार्थियों तथा अध्यापकों को बहुसांस्कृतिक शिक्षा के विषय में जागरूक किया जा सकता है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा को ध्यान में रखकर लेखकों द्वारा उसी प्रकार की सामग्री का निर्माण किया जाना चाहिए, जिसमें प्रत्येक संस्कृति को सम्मान दिया जाए। साथ ही, पुस्तक में संकलित विषय-सामग्री में किसी भी प्रकार का सांस्कृतिक पूर्वाग्रह न हो।

अध्यापकों के लिए

इस शोध अध्ययन में सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च पाया गया है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा की महत्ता के प्रति जागरूक एवं सकारात्मक दृष्टि रखने वाले ये सेवा-पूर्व अध्यापक अपने सहकर्मियों को बहुसांस्कृतिक शिक्षा के बारे में बताएँगे। साथ ही, भविष्य में कक्षा में इस ज्ञान को अभ्यास में भी लाएँगे, जिससे कक्षा में शिक्षा का समावेशी और अनुकूल वातावरण तैयार किया जा सकेगा।

विद्यार्थियों के लिए

बहुसांस्कृतिक शिक्षा की महत्ता के प्रति जागरूकता एवं सकारात्मक दृष्टि रखने वाले अध्यापक अपनी कक्षा में अध्यापन के दौरान विद्यार्थियों को भारतीय एवं स्थानीय संस्कृति के बारे में बताएँगे, जिससे विद्यार्थियों में संस्कृति के प्रति जागरूकता विकसित होगी। अध्यापक संस्कृतिक पूर्वाग्रहों से बचकर अपनी कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को नियोजित तथा क्रियान्वित करेगा। इससे अध्यापकों को विद्यार्थियों में सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों एवं संवैधानिक मूल्यों को विकसित करने में सहायता मिलेगी।

अन्य शोधार्थियों के लिए

इस शोध अध्ययन की प्रक्रिया तथा परिणाम शिक्षा, मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र से जुड़े उन शोधार्थियों के लिए सहायक सिद्ध होंगे, जो बहुसांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में शोध अध्ययन कर रहे हैं।

संदर्भ

क्रेसवेल, जे. डब्ल्यू. 2012. *एजुकेशनल रिसर्च*. पाँचवाँ संस्करण. पियर्सन एजुकेशन, बोस्टन.

डबबेल्ड, ए. और अन्य. 2019. टीचर्स मल्टीकल्चरल एटीट्यूडस एंड पर्सेपशन ऑफ़ स्कूल पॉलिसी एंड स्कूल क्लाइमेट इन रिलेशन टू बर्नआउट. *इंटरकल्चरल एजुकेशन*. 30(6). पृष्ठ संख्या 599–617. DOI: 10.1080/14675986.2018.1538042

टोरे, इ. 2020. एक्ज़ामिनिंग टीचर्स एटीट्यूडस टुवर्ड्स मल्टीकल्चरलिज़्म अकोर्डिंग टू वेरियस वैरियेबल. *इंटरनेशनल ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइंसेज*. 12 (1). पृष्ठ संख्या 228–246. 28 जनवरी, 2023 को https://www.researchgate.net/publication/339831175_Examining_Teachers%27_Attitudes_towards_Multiculturalism_according_to_Various_Variables से प्राप्त किया गया।

बैपटिस्ट, एच. और एम. बैपटिस्ट. 1980. कम्पीटेंसिस टुवर्ड्स मल्टीकल्चरलिज़्म. *मल्टीकल्चरल टीचर एजुकेशन-प्रीपेयरिंग टीचर एजुकेटर टू प्रोवाइड एजुकेशनल एक्विटी*. (संपादन— बैपटिस्ट, एच., एम. बैपटिस्ट और डी. गोलनिक, प्रथम संस्करण. अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ कोलेजेस फ़ॉर टीचर एजुकेशन. वाशिंगटन, डी. सी. 15 जनवरी, 2023 को https://files.eric.ed.gov/fulltext/ED186355.pdf से प्राप्त किया गया।

यूनेस्को गाइडलाइन्स फ़ॉर इंटरकल्चरल एजुकेशन. 2019. 18 जनवरी को https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000147878 से प्राप्त किया गया।

यिल्दिरिम, एस. और इ. तेज़िस. 2016. टीचर्स एटीट्यूडस, बिलिफ्स एंड सेल्फ़ एफ़ीकेसी अबॉउट मल्टीकल्चरल एजुकेशन— ए स्केल डेवेलपमेंट. *यूनिवर्सल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च*. 4 (12A). पृष्ठ संख्या 196–204. 20 जनवरी, 2023 को https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1126044.pdf से प्राप्त किया गया।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. 24 जनवरी, 2023 को https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/hindi.pdf से प्राप्त किया गया।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्. 2009–10. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फ़ॉर टीचर एजुकेशन— टुवर्ड्स प्रीपेयरिंग प्रोफेशनल एंड ह्यूमन टीचर*. एन.सी.टी.ई. 12 फ़रवरी, 2023 को https://ncte.gov.in/website/PDF/NCFTE_2009.pdf से प्राप्त किया गया।